

भ. श्रो.वि./पानीपत/80-84/32834.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं आदर्श वृन्द इन्डस्ट्रीज़, बीबर्ज़ कालीनी, पानीपत, के अधिक थी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों द्वारा प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त गठि नियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अधिकाला नो विवादप्रस्त या उसमें संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों वो बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुख्यतः अथवा संबंधित मामला है :—

या श्री नाथपाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हुक्मदार है ?

स. श्रो.वि./एक.शी.-83-84/32840.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) मैं गैडोरटन्ज़ प्रा.नि., यूनिट नं. 3, यू.एस.इंडस्ट्रीज़, रेडियो, फरीदाबाद (2) प्रैज़ीडेंट द्वारा गैडोर इम्पलाइंज़ प्राइमरी को-ऑप्रेटिव कन्सुमरज़ स्टोर्स न. फरीदाबाद, के अधिक श्रम पाल मिल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है :

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं :—

इसलिए, अब श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 से उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ 52ने 14 अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय के फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उसमें मुख्यतः या उसमें सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच यह तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुख्यतः अथवा संबंधित मामला है :—

या श्री श्रम पाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित रूप ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हुक्मदार है ?

स. श्रो.वि./एक.शी./79-84/32848.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं साकार्यार्थी कैमोका गण्ड इण्डस्ट्रीज़ प्रा.नि., घाट नं. 70, सं. 42-6, फरीदाबाद, के अधिक श्री सुरजीत कुमार तथा उनके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ।

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं :—

इसलिए, अब श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ 52ने 14 अधिसूचना वर्ष 11495-जी-श्रम-68श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय के फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उसमें मुख्यतः या उसमें सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अधिक श्री चून्नी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ।

या श्री सुरजीत कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित रूप ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हुक्मदार है ?

स. श्रो.वि./एक.शी./138-84/32855.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं जमीना-डक्टरप्राइमिज़, 341 वी, नेहरू शाहनामी फरीदाबाद, के अधिक श्री चून्नी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ।

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं :

इस लिए, अब श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने 52, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ 52ने 14 अधिसूचना वर्ष 11495-जी-श्रम-68श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उसमें मुख्यतः या उसमें सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक वो बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुख्यतः अथवा संबंधित मामला है ।

या श्री चून्नी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित रूप ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हुक्मदार है ?

स. श्रो.वि./रोहतक/15-84/32862.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) मैं जमीन मैनेजर, हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक, (2) नियंत्रक, हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़, के अधिक श्री अशोक कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय, हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं :

इस लिए, अब श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1948 की धारा 10 की उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने 52, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 16 नवम्बर,

1970 के माथ पठित संस्कारी अधिसूचना म. 3834-एएस.ओ. (ई) 70/1348 दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अर्थात् गोड़ व्रत नियम द्वारा संहित या उसके सुमंगल या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यापति गेंग हेतु निर्दिष्ट है जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या नो विवादप्रस्त भाषण है या उक्त विवाद से संबंधित या नाम नियन मामला है।

वया श्री श्रीष्ठोक कमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

मं औ.पि./जो.एस./102-84/32870.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं, शोक भिन्नरत्न चाडिंग एण्ड, पोटरी क, दोकताबाड गोड़ गुडगांव, के श्रमिक श्रीपती नारायण देवी, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निर्दिष्ट मामलों में कोई श्रीदोषिक विवाद है:

गोरा चूंकि हरियाणा के राज्यपाल ने न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

उमरिंग, अब श्रीदोषिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 54153-श्रम-68/15251 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी 1958 द्वारा उक्त उक्त अधिनियम के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद के विवादप्रस्त या उससे सुमंगल या उसके संबन्धित नीचे लिखा मामला व्यापति गेंग के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगल ग्रथवा संबन्धित मामला है।—

वया श्रीमती नारायण देवी नीचे सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

मं औ.पि./एफ.डी./67-8/32877.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं, नव तारा एण्ड कॉ. प्लाट नं. 168, सेक्टर 25, बलनगर, के श्रमिक श्री कृष्ण मांझी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निर्दिष्ट मामलों में कोई श्रीदोषिक विवाद है।

गोरा चूंकि हरियाणा के राज्यपाल दिवाइ को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

उमरिंग, अब श्रीदोषिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-5-श्रम-68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुमंगल या उसके संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगल ग्रथवा संबन्धित मामला है।—

वया श्री कृष्ण मांझी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.पि./एफ.डी./107-84/32884.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं स्टेनलैस एण्ड स्टील प्रोडक्ट्स कम्पनी, १५ ही.एन.एफ. इंडियन एरिया ११, १३/१, मध्यरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री वामुदेव धाम की तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निर्दिष्ट मामलों में कोई श्रीदोषिक विवाद है;

गोरा चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इम रिंग, अब श्रीदोषिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुमंगल या उसके संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगल ग्रथवा संबन्धित मामला है।—

वया श्री वामुदेव धाम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.पि./भिन्नरती/32891.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1. मैं नियंत्रक, हरियाणा ग्राम परिवहन, चाढ़ीगढ़, 2. महाप्रबन्धक, हरियाणा रोडवेज, जीन्द, के श्रमिक श्री मृबे सिंह की तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसके बाद निर्दिष्ट मामलों में कोई श्रीदोषिक विवाद है;

गोरा चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इम रिंग, श्रीदोषिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 19 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अम्बिला को विवादप्रस्त या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगल ग्रथवा संबन्धित मामला है।—

वया श्री मृबे सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?